

गोबर में बिजली खोजती आईटी कंपनियां

प्रमोद भार्गव

जल्दी ही गाय का गोबर ऊर्जा का बड़ा वैकल्पिक स्रोत बनने जा रहा है। बिजली की कमी के चलते दुनिया की बड़ी आईटी कंपनियां इसका समाधान गाय के गोबर में तलाश रही हैं। अमरीकी कंपनी एचपी ने तो एक गंभीर व उपयोगी शोध के बाद गायों से डेटा सेंटर चलाने की एक बड़ी योजना को अंजाम देना शुरू भी कर दिया है।

यदि गोबर से बिजली उत्पादन की तकनीक आम हो जाती है तो दुनिया को एक साथ कई समस्याओं से छुटकारा मिलने की उम्मीदें जताई जा रही हैं। गायें ज्यादा पाली जाएंगी तो दूध की कमी से निजात मिलेगी। साथ ही दूध के सहायक उत्पाद जिस तरह से मानव जीवन के लिए हानिकारक उत्पादों के रूप में सामने आ रहे हैं, उस पर भी अंकुश लगेगा। ईंधन और जैविक खाद की उपलब्धता भी बढ़ेगी और रासायनिक खाद से मुक्ति के द्वार खुलेंगे। खाद्य सुरक्षा और रोजगार में भी मदद मिलेगी।

एचपी कंपनी द्वारा कराए शोध से पता चला है कि दस हजार गायों की मदद से एक मेगावाट खपत वाला डेटा सेंटर आसानी से चलाया जा सकता है। शोध के मुताबिक दस हजार गायों की क्षमता वाली डेयरी में हर साल दो लाख मीट्रिक टन खाद पैदा की जा सकती है। एक दिन में पैदा होने वाली खाद तीन मेगावाट क्षमता वाले डेटा सेंटर को चलाने के लिए पर्याप्त है।

शोधकर्ताओं के अनुसार दुनिया के तमाम दुग्ध उत्पादक देश गाय के गोबर की समस्या से जूझ रहे हैं। ऐसे देशों में नीदरलैंड प्रमुख है। दूसरी ओर, दुनिया की आईटी व अन्य कंपनियों के डेटा सेंटर विद्युत संकट से जूझ रहे हैं। लिहाजा गोबर से ऊर्जा के उपयोग से जरूरी बिजली की मांग पूरी की जा सकती है। एचपी प्रयोगशाला के प्रमुख चंद्रकांत पटेल के मुताबिक गोबर के इस्तेमाल से न केवल गोबर व खाद मिलेगी, अपितु पर्यावरण को प्रदूषण से भी मुक्त रखा जा सकेगा।

वैकल्पिक ऊर्जा के रूप में गोबर का उपयोग कोई नई बात नहीं है। ग्रामीण इलाकों में छोटे स्तर पर गोबर गैस संयंत्र लगाकर गोबर गैस का उत्पादन किया जा रहा है। कई गांवों का अंधेरा भी इन संयंत्रों ने हमेशा के लिए दूर कर दिया है। ऐसे में गायों की मदद से गोबर गैस संयंत्रों के माध्यम से डेटा सेंटर चलाने का सिलसिला भारत में भी शुरू होता है तो किसानों व ग्रामीणों को अतिरिक्त आमदनी मिलेगी। सहकारिता के रूप में भी इस व्यवसाय को मूर्त रूप दिया जा सकता है। पालतू पशुओं की विविधता भी संरक्षित रहेगी।

हालांकि ऊर्जा के लिए पशुपालन एक उद्योग के रूप में बड़े पैमाने पर सामने आ जाता है तो यह कई प्रकार के संकट भी पैदा कर सकता है। वर्तमान में जिन बड़ी डेयरियों का औद्योगिक रूप में इस्तेमाल हो रहा है, वे मूलतः अमीरों के लिए दूध, घी, अंडे व मांस का उत्पादन करती हैं। पशुओं से दूध व मांस ज्यादा से ज्यादा उत्पादित किया जा सके इसके लिए इन निरीह प्राणियों पर इंजेक्शनों के जरिए रसायनों का उपयोग तो किया ही जाता है, अमरीका, कनाडा, नीदरलैंड व अन्य पाश्चात्य देशों में मवेशियों को अनाज, तिलहन व मांस से बने आहार भी बेवजह ज्यादा मात्रा में खिलाए जाते हैं। अमरीका में पैदा होने वाले काफी सारे अनाज का उपयोग तो केवल मवेशियों को खिलाने और ईंधन बनाने में होता है। अमरीका स्थित अंतर्राष्ट्रीय खाद्य नीति शोध संस्थान के जोकिम फॉन ब्रान का मानना है कि इन्हीं के चलते विश्व को खाद्य संकट की ओर धकेला जा रहा है। इन कारणों ने दुनिया की एक अरब आबादी को भुखमरी के दायरे में ला दिया है।

लेकिन भारत में जिस तरह से बहुराष्ट्रीय कंपनियों के दखल को असंगठित क्षेत्र में संकट माना जा रहा है, उसी तरह से यदि गोबर से ऊर्जा बनाने के क्षेत्र में भी कंपनियां उतर आती हैं तो सीमांत किसान और पशुपालक अपने

पशुपालन के मूल पेशे से तो बेदखल होंगे ही, कंपनियों की गायें पालने के लिए बंधुआ भी हो जाएंगे, ऐसी आशंकाएं जताई जा रही हैं।

इस स्थिति को अमरीका में सूअर पालन केंद्रों की पूर्व और वर्तमान स्थिति के सटीक आकलन से समझा जा सकता है। 1965 में यहां पांच करोड़ तीन लाख सूअर थे जो दस लाख लघु व बड़े सूअर पालन केंद्रों में पाले जाते थे। इन सूअरों को पालने का ज्यादातर काम छोटे पशुपालकों के हाथों में था, जो परिवार के सभी सदस्यों के सहयोग से चलते थे। लेकिन सूअरों से मांस उत्पादन का व्यवसाय जब

बड़ी कंपनियों के हत्थे चढ़ गया तो अमरीका में आज केवल पैंसठ हजार सूअर पालन केंद्रों में छह करोड़ पचास लाख सूअर पाले जा रहे हैं। इस एक पशु पालन के व्यवसायीकरण से कितने लोग बेरोज़गार हुए इसका अंदाज़ा सहज ही लग जाता है। एक जैसे माहौल में पाले जाने के कारण पशु संपदा से जुड़ी जैव विविधता भी खतरे में आ सकती है। मौजूदा हालातों में दुनिया भर में मवेशियों की लगभग चार हजार प्रजातियां अस्तित्व में हैं। तमाम विपरीत आशंकाओं के बावजूद गाय के गोबर से ऊर्जा उत्पादन के प्रयासों को हतोत्साहित नहीं किया जाना चाहिए। **(स्रोत फीचर्स)**